IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

संस्कृत कथा-साहित्य में मानवीय मूल्य

(पंचतंत्र के संदर्भ में)

संस्कृत कथा-साहित्य का उद्भव एवं विकास-

SUDERSHAN GOYAL
lecturer

संस्कृत साहित्य की अन्य विधाओं की भाँति ही संस्कृत कथा-साहित्य की उत्पत्ति भी वौदिक साहित्य से ही हुई है और इसका विकास वैदिक संस्कृत, पालि-प्राकृत एवं अपभ्रंश आदि कई उत्तरोत्तर विकसित भारतीय भाषाओं से होता हुआ अद्यावधि चला आ रहा है। कथा के उद्भव के सम्बन्ध में विद्वानों ने चिन्तन मनन किया है, उन्होंने अनेक विचार प्रस्तुत किये है- पाश्चात्य विचारक 'प्रो० मैक्समूलर' का विचार है कि- "प्रारम्भ में कहानियाँ प्रतीकात्मक थीं, उनका मूल अर्थ तत्कालीन लोग जानते थे परन्तु कालान्तर में समय की अविरल गति के साथ लोग उस प्रतीकार्य को भूल गये और उसका सम्बन्ध किसी व्यक्ति या वस्तु से जोड़ दिया।"1.

किन्तु दूसरे विचारक 'टेलर' और 'लैंग' 'मैक्समूलर' के इस विचार से सहमत नहीं थे। उनका कथन था कि "कथाओं का जन्म मनुष्य की आदिम में होता है, उस समय उसे अपने आहार के लिए प्रकृति की खुली गोद में अधिक समय तक विचरण करना पड़ता था तथा सन्ध्या और प्रातःकाल के समय अपने शिशुओं के साथ बैठा, वह कथायें सुनाया करता था। इस प्रकार की प्रारम्भिक अवस्था प्रत्येक देश की धरती पर किसी न किसी समय अवश्य रही है और परिणाम स्वरूप इन मनोरञ्जन कारिणी कथाओं का प्रणयन हुआ है।2.

यद्यपि कथाओं के उद्भव में जो भी तत्त्व विद्यमान रहे हों इतना तो निश्चित ही है कि मनुष्य की कल्पना का कथाओं के निर्माण में बड़ा योगदान रहा होगा। कभी-कभी मनुष्य प्राकृतिक पदार्थों के विषय में कथाओं की योजना करता रहा होगा और मनोरञ्जन के तत्त्व का सन्निवेश करने के विष्णु प्राकृतिक पदार्थों के नामों को छिपाकर अन्य नामों की योजना करता रहा होगा, दूसरी ओर जीवों के क्रिया-कलापों को कल्पना के सहारे नवीन रूप प्रदान कर कथाओं की सृष्टि करता रहा होगा। इस समय यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि केवल एक ही संस्कृत में तो कथाओं के विषय में एक विशाल साहित्य है जिसने भारतीय साहित्य पर ही अपनी छाप नहीं डाली है, प्रत्युत भारतेतर साहित्य पर भी इसका प्रभाव स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है, वैदिक साहित्य में अनेक प्राचीनतम उदाहरण

उपलब्ध हैं। ऋग्वेद के 'संवादसूक्त' तो चमत्कारी कथाओं के लिए प्रख्यात ही है। इसके अतिरिक्त स्तुति परक सामान्य सूक्तों में भी विभिन्न देवों के विषय में शिक्षाप्रद एवं मनोरञ्जक आख्यानों की उपलब्धि होती है।'3.

इन आख्यानों, सूक्तों में कथा कहने की गद्य-पद्यात्मक विशिष्ट भारतीय शैली के दर्शन होते हैं। इन आख्यानों में पुरुरवा उर्वशी की प्रसिद्ध कथा भी है।

ब्राह्मण ग्रन्थों में यज्ञ सूत्रों के बीच-बीच में कथायें सुनाने का प्राविधान है।
उपनिषदों में भी अनेक कथाओं का प्राविधान है। उदाहरण रूप में 'छान्दोग्य उपनिषद् की एक कथा में वृषभ, हंस और बगुला सत्यकाम जाबाल को उपदेश देते है। महाभारत में पशु कथायें स्पष्टतया उपलब्ध होती है। धृतराष्ट्र को उनके एक मंत्री पाण्डवों के साथ वैसा ही व्यवहार करने की सलाह देते है, जैसा कि बुद्धिमान् सियार ने अपने साथियों व्याघ्र, चूहा, नेवला और भेड़िया की सहायता से शिकार प्राप्त कर हिस्सा बाँटते समय चालाकी से उन्हें वंचित कर दिया था।4.

कथा-साहित्य का वर्गीकरण-

कथा-साहित्य के स्वतन्त्र ग्रन्थों की रचना कब से शुरू हुयी यह निश्चयपूर्वक कह सकना आज भी सम्भव नहीं है।

सम्भवतः ईसा की पाँचवी शताब्दी के बहुत पहले से ही कथाओं का प्रणयन प्रारम्भ हो गया था और तब से लेकर मध्यकाल के प्रायः अन्त तक संस्कृत साहित्य में कथा-साहित्य का सर्जन होता रहा। कथा-साहित्य की इस दीर्घकालिक परम्परा में कुछ नीति परक एवं ज्ञानवर्धक ग्रन्थों का वर्णन यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा हैं।

पञ्चतन्त्र-

पञ्चतन्त्र संस्कृत नीतिकथा-साहित्य का अत्यन्त प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। यह संस्कृत साहित्य की अपूर्व कृति है। ये न केवल इस देश में बल्कि अन्य देशों में भी विशेषतः इस्लामी जगत् और यूरोप के सभी देशों के कथा-साहित्य में न्यूनाधिक रूप में अनुप्रविष्ट दृष्टिगत होता है।
इसमें पाँच तन्त्र अर्थात् अध्याय है जिनके नाम क्रमशः है-

1. मित्रभेद

इस तन्त्र में अमरशक्ति राजा अपने पुत्रों को उसकी इस प्रतिज्ञा पर सौंपता है कि वह उन्हें छः मास में राजनीति का ज्ञान करा देगा। उसके बाद मित्रभेद का विषय हमारे सम्मुख आता है। मित्रभेद की कथा मित्रों में फूट डालने की है।

2. मित्रसम्प्राप्ति

दूसरा तन्त्र जिसमें 'मित्रसम्प्राप्ति' वर्णित है कदाचित् अधिक आकर्षक है। पहली कथा में चित्रग्रीव नामक कबूतर की कहानी है। सम्पूर्ण कहानियों को पढ़ने से पता चलता है कि मित्रों की सहायता से कैसे विपत्तियों से पार पाया जा सकता है। इसका निदर्शन प्रस्तुत करता है। ये सम्पूर्ण कथायें बहुत सरल सुबोध और मुहावरेदार है।

3. सन्धि-विग्रह

सन्धि-विग्रह नामक तीसरे तन्त्र में युद्ध और सन्धि का वर्णन है। इस तीसरे तन्त्र की कथायें युद्ध और सन्धि की दाँव-पेचों से परिचित कराती हैं। इन कथाओं में किस प्रकार उलूकों की गुहा कौओं द्वारा जला दी गई। युद्ध का आरम्भ वाणी के एक दोष के कारण बताया गया है और इस प्रसंग में व्याघ्र की एक खाल ओढ़े हुए गधे की कथा कही जाती है जिसने रेंग कर अपने प्राण गवायें।

4. लब्धप्रणाश

लब्धप्रणाश की कथायें उन मूखों की मूर्खता की ओर इंगित करती है, जिनके कारण प्राप्त वस्तु या सुख से हाथ धोना पड़ता है ।

5. अपरीक्षितकारक

पाँचवे तन्त्र में अपरीक्षितकारक की कथायें बिना सोचे-विचारे काम करने के दुष्परिणाम को प्रदर्शित करती हैं। उदाहरणतः उस स्वामिभक्त नेवले और ब्राह्मणी की कथा है जिसे ब्राह्मणी ने जल्दबाजी में बिना विचार किये ही मार डाला।

हितोपदेश-

पञ्चतन्त्र पर आधारित यह कथा ग्रन्थ बंगाल में अत्यधिक लोकप्रिय रही है। इसकी रचना चौदहवीं शताब्दी के आस-पास 'नारायणपण्डित' ने की थी जिसके आश्रयदाता धवलचन्द्र थे और इस ग्रन्थ की एक हस्तलिखित पोथी की तिथि 1373 ई. होनें के कारण इससे स्पष्ट होता है कि ये लेखक इससे पूर्ववर्ती रहा होगा।5.

बृहत्कथा-

भगवती गौरी को प्रसन्न करने वाली बृहत्कथा हरलीला के समान संसार को विस्मित करने वाली है।

सोमदेवकृत कथासरित्सागर-

इस ग्रन्थ के नाम का स्वभाविक अर्थ है- "कथारूपी नदियों का सागर'। कथासरित्सागर को कश्मीर के पण्डित राम के पुत्र सोमदेव ने त्रिगर्त (कल्लू कांगड़) के राजा की पुत्री कश्मीर के राजा अनन्त की पत्नी सूर्यमती के मनोविनोद के लिए ई0 1063 और 1080 के बीच लिखा था।

नीतिकथा का अर्थ एवं स्वरूप-

नीतिकथा गद्य एवं पद्य में अभिव्यक्त एक ऐसी संक्षिप्त कथा है, जिसमें पशु-पक्षियों के माध्यम से नीति तत्त्व का प्रतिपादन किया जाता है। अंग्रेजी भाषा में नीतिकथा के लिये 'FABL' शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'FABL' शब्द की व्युत्पत्ति 'लाटिनी' शब्द 'FABULA' से हुई है जिसका अर्थ है- "एक बात कही गयी।" [A Thing Said]

फेबुला शब्द का उदगम् 'FARI' धातु से हुआ है। जिसका अर्थ है 'कहना' अथवा बोलना।' 6.अंग्रेजी शब्द कोश में फेबल शब्द के पाँच अर्थ दिये गये है-

1. काल्पनिक कहानी।

2. कोई कविता, कथानक या कहानी।

3. उपयोगी शिक्षा प्रदान करने हेतु लोक कथा।

मानवीय मूल्य-

मानव अपने संपूर्ण परिवेश में विशिष्ट एवं सुंदरतम् रचना है, जिसकी समानता पार्थिव किसी भी पदार्थ या जीवन राशि से संभव नहीं, चाहे इस बात को 'न मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्' 7.
जैसी पुरातन उक्तियों से प्रमाणित किया जाय या फिर इसी तरह की बात प्रकारान्तर से प्रस्तुत करने वाले मानव-वादी विचारकों की वाक्यावलियों से।

आधुनिक युग में प्रायः सभी मानववादी चिंतक मानव की अर्थवत्ता एवं महत्त को स्थापित एवं प्रतिष्ठित करने के लिए प्रयत्नशील हैं। इनके समस्त चिंतन का मुख्य केन्द्र-बिन्दु मानव का स्वस्थ एवं सम्यक् विकास है। मानव का स्वस्थ एवं सम्यक् विकास किस प्राकर हो? वह कैसे जीवन-यापन करें? इन्हीं प्रश्नों के समाधान हेतु मानव के लिए मानव मूल्यों की कल्पना की गई है।

पञ्चतंत्र में मानवीय मूल्य
पञ्चतंत्र के कथामुख में अमरशक्ति नाम के राजा के तीन मूर्ख पुत्रों - बाहुशक्ति, उग्रशक्ति और अनन्तशक्ति के मूर्खता का आख्यान है। कथामुख के द्वारा यह प्रदर्शित किया गया है कि अंज्ञानी पुत्र पिता के मस्तिक के भार स्वरूप होते हैं। ज्ञान-विहीन पुत्रों का जन्म लेना बेकार है; क्योंकि मनुष्य जड़ पुत्रों के रहने से समाज में निन्दा का पात्र होता है। यथा-

अजातमृतमूर्खेभ्यो मृताजातौ सुतौ वरम् । यतस्तौ स्वल्पदुःखाय यावज्जीवं जडो दहेत् ।।8.

अर्थात् उत्पन्न ही नहीं हुए या पैदा होकर मर गये ये पुत्र मूर्ख पुत्रों से अच्छे है, क्योंकि ये अत्यन्त अल्प दुःख देने वाले होते हैं, परंतु मूर्ख पुत्र जीवनपर्यन्त सन्ताप देता है। कथामुख के माध्यम से इस तथ्य पर प्रकाश पड़ता है कि अमरशक्ति नाम के राजा ने अपने मूर्ख पुत्रों को विष्णुशर्मा जैसे विद्वान् को सौंप कर तथा विष्णुशर्मा नामक विद्वान् ने कथाओं के माध्यम किस प्रकार से मानवीय मूल्यों की शिक्षा देकर लोकाचार एवं राजनीति विद्या में प्रवीण बनाया।

प्रथम तंत्र की कथाओं से प्राप्त मानवीय-मूल्य-

कथामुख के बाद पञ्चतंत्र का 'प्रथम तंत्र' 'मित्रभेद' है मित्रभेद का तात्पर्य है 'मित्रों में भेद उत्पन्न करना अर्थात् दो अभिन्न हृदयों में बैर का बीजा रोपण करना।" इस तंत्र की मुख्य कथा यह है कि दमनक नामक श्रृगांल पिङ्गलक नामक सिंह तथा सञ्जीवक नामक बैल जो विश्वसनीय मित्र थे उनके बीच द्वेष उत्पन्न करा देता है। पिङ्गलक सञ्जीवक का उद्धार कर उसे अपना परममित्र बनाकर मित्रतारूपी फल का आस्वादन करता हुआ आनन्द से विचरण कर रहा था। दोनों के आपसी मित्रभाव को

देख उसे सहन न करने वाला एंव मंत्री पद पर बने रहने की इच्छा वाला सिंह का मंत्री दमनक नामक श्रृगाल ने पिङ्गलक एवं सञ्जीवक का प्राणान्त करा दिया। सञ्जीवक की मृत्यु के अनन्तर पिङ्गलक दुःखी होता है।' पर दमनक अनेक नीतियों के द्वारा उसे समझाकर तथा सान्तवना प्रदान कर मंत्री पर बना रहता है। दमनक पिङ्गकलक को समझाते हुए कहता है कि-

सत्यानृता च पुरुषा प्रियवादिनी च
हिंस्रा दयालुरपि चाथपरा वदान्या ।
भारेव्यथा प्रचुरक्तिसनागमा
च वेश्याङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा।।'9.

अर्थात् जिस तरह वेश्या विविध प्रकार का रूप धारण करती है सत्य के तुल्य प्रतीत होने पर यथार्थ में असत्य भाषिणी होती है, मधुर भाषिणी होने पर भी कठोर होती है, दयामयी होने पर भी हिंसा से पूर्ण होती है, धन की लोभी होने पर भी उदार प्रतीत होती है, बहुत धन खीचने पर भी बहुत खर्च करने वाली प्रतीत होती है। उसी तरह राजा की नीति भी बहुरूपिणी होती है। क्योंकि जो विद्वान् होते है, वे मरने और जीने वालों के लिए सोच नहीं करते। इस प्रकार उसके समझाने पर पिङ्गलक सञ्जीवक के शोक को छोड़कर दमनक के मन्त्रित्व से राज्य करने लगा। इस प्रकार दाव-पेंचों की दृष्टि से 'प्रथमतंत्र' का महत्वपूर्ण स्थान है। इस तन्त्र की मुख्य कथा की सहायता से उन उपायों का वर्णन किया गया है, जिनकी सहायता से कोई भी व्यक्ति दो आपसी संबंधों के मध्य फूट उत्पन्न कर अपना स्वार्थ निष्पादन कर सकता है। इस तंत्र में मुख्य कथा के अतिरिक्त अनेक गौण कथायें भी आयी हैं तथा गौण कथाओं में भी सह गौण कथाएं अन्तर्निहित है, जो अपने मतों के समर्थन में विभिन्न पशु-पक्षियों द्वारा कही गयी हैं। इन कथाओं का भी अपना अलग-अलग 'प्रतिपाद्य' है। ये कथायें मूल कथा में अवरोध नहीं उत्पन्न करती है, वरन् सहायक है। "कील को उखाड़ने के कारण मृत्यु को प्राप्त हुए वानर की कथा' में एक वानर आरे से आधी चीरी गयी लकड़ी में फँसे हुए कील को उखाड़ने की कोशिश करता है, कील निकल जाने के कारण लकड़ी के बीच उसका अण्डकोष दब जाता है, जिससे वह मृत्यु को प्राप्त होता है। यह कथा इस बात की ओर संकेत करती है कि "अपने से जो बात संबंध नहीं रखती है, उसमें मनुष्य को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, क्योंकि हस्तक्षेप करने पर इसका परिणाम अत्यन्त भयंकर एवं बुरा होता है।10.

'देवशर्मा परिब्राजक की कथा 11. में देवशर्मा नाम का एक सन्यासी आषाढ़भूति नामक चोर के भूलावे में पड़कर उसे अपना शिष्य बना लेता है। कुछ समय बात वह देवशर्मा नामक सन्यासी के संपूर्ण धन को लेकर भाग जाता है। अतः यह कथा यह शिक्षा देती है कि 'कपट वाक्यों के विश्वास में पड़कर जिस किसी को शिष्य बनाना उचित नहीं है। इसी कथा में दूसरी एक कथा श्रृगाल' 12.की है, जो मेढ़ों के झुण्ड के बीच दो मेढ़ों की लड़ाई में उनके सिर से निकले रूधिर का पान कर रहा था और दोनों के सीर के बीच दब कर मार डाला गया। अतः इस कथा द्वारा यह बताया गया है कि 'लालच का फल बुरा होता है। इसी कथा में एक तीसरी कथा 'एक दुती की है, जिसने अपनी सखी जुलाहे की पत्नी के प्रेम को आगे बढ़ाने के लिए उसका स्थान ग्रहण कर लिया और वह नासिका विहीन हो गयी। इस कथा के माध्यम से यह बताया गया है कि "गलत कार्यों में भाग नहीं बँटाना चाहिए क्योंकि इसका फल कटु होता है।"

"वायस दम्पत्ति की कथा 13.में कौवी ने एक राजकुमारी का हार एक बिल में डाल कर अपने बच्चों को खाने वाले सर्प को मरवा दिया।

इस कथा में चतुरता पर विजय दिखायी गयी है और यह संदेश दिया गया है कि-

उपायेन हि यत्कुर्यात्तन्न शक्यं पराक्रमैः । 14.

अर्थात् जो कार्य उपाय द्वारा किया जा सकता है उस कार्य को पराक्रम द्वारा नहीं किया जा सकता- 'बगुले एवं केकड़े की कथा 15. में एक बगुला अनावृष्टि का झूठा भुलावा देकर जल में निवास करने वाले विभिन्न प्राणियों के प्राणों को बचाने के लिए दूसरे जगह ले जाकर खा जाया करता था। अन्त में केकड़े के द्वारा वास्तविकता समझ कर मार डाला गया। अतः यह कथा बताती है कि "अतिलोभ दोष से युक्त होता है और अन्तोगत्वा प्राणघातक सिद्ध होता है। 'भासुरक सिंह की कथा' 16. में भासुरक नाम का सिंह संपूर्ण जंगल का राजा था वह प्रतिदिन एक-एक प्राणियों को खाता था। एक दिन एक शशक की बारी आई। शशक की बुद्धि से सिंह कुएँ में गिराकर मार डाला गया। इस कथा से यह शिक्षा मिलती है कि-

यस्य बुद्धिर्बलं तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम् ।
वने सिंहो मदोन्मत्तः शशकेन निपातितः ।। 17.

अर्थात् जिसके पास बुद्धि है उसी के पास बल भी है, निर्बुद्धि के पास बल नहीं है, जैसे बुद्धिमान खरगोश ने बुद्धिहीन सिंह को बुद्धि के बल पर ही मार डाला।" 'अग्रिमुखमत्कुण तथा मन्दविसर्पिणीयूका कथा 18. का मुख्य प्रतिपाद्य यह है कि

न ह्यविज्ञातशीलस्य प्रदातव्यः प्रतिश्रयः ।
मत्कुणस्य च दोषेण हता मन्दविसर्पिणी" ।। 19.

अर्थात् 'जिसका स्वभाव ज्ञात न हो उसे कदापि आश्रय नहीं देना चाहिए।' अग्रिमुख नामक मत्कुण (खटमल) को आश्रय देने के कारण ही यूका (जें) की भी जान चली गयी। 'चण्डरवश्रृगाल की कथा 20. में चण्डरव नाम का श्रृगाल एक बार एक धोबी के नीलभाण्ड में गिरकर नीले रंग का हो गया और जंगल में आकर सभी प्राणियों से बताया कि ब्रह्मा के द्वारा मैं जंगल का राजा नियुक्त किया गया हूँ। यह सुनकर सिंह आदि शक्तिशाली प्राणी उसकी आज्ञाओं का पालन करने लगे। भेद खुल जाने के डर से वह अपने जाति के सियारों को अपने पास नहीं रहने देता था। कालान्तर में वाणी दोष के कारण उसका भेद खुल गया और वह सिंह के द्वारा मार डाला गया। अतः इस कहानी में यह बताया गया है कि "अपने जाति के लोगों से वैर नहीं करना चाहिए। अतः यह कथन सत्य ही है कि-

त्यक्ताश्चभ्यंतरा येन बाह्याश्चाभ्यन्तरीकृताः ।

1. एस.ए. डांगे लीजेन्डस इन द महाभारत, भूमिका, पृ. 27। 2. तत्रैव, पृ. 27-281

3.सं.साहित्य का इतिहास , बलदेव उपाध्याय पृ 431.

4.तत्रैव, पृ. 271 ।

5.सं.सा.सं.इति., अध्यापक वृन्द, पृ. 217।

6.Water W. Skeat. Etymological Dictionary of the English Language oxford and Edition, 1883.

7.महाभारत, शान्तिपर्व, 180/131

8.पं.. कथामुख श्लोक- 4. पृ. 2।

9.. तत्रैव, सू. 459. पृ. 195

10..पं.. श्लोक- 41/2/पृ. 14.।

11.तत्रैव, 1/3/पृ. 571।

12.तत्रैव, 1/3/पृ. 61.।

13. तत्रैव, 1/6/901।

14. तत्रैव, सू 228/पृ. 89/।

15.. तत्रैव, 1/7/ पृ 91।

16. तत्रैव, 1/8/पृ. 97।

17.पञ्चतंत्र, 1/237/पृ. 971

18.. तत्रैव 1/9/पृ. 111। 3.

19.. तत्रैव 1/275/पृ. 1101

20.. तत्रैव. 1/10/